श्री गणेशाय नमः

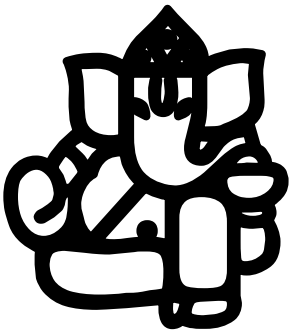

Horoscope of **Sample**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम	: Sample
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 27 अप्रेल, 1992 सोमवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 10:50:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Virudhunagar
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.58 पूरब , 9.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 45 मिनिट. 15 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: शताभिषा - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: कुंम्भ - शनि
लग्न - लग्न का देव	: मिथुन - बुध
तिथि	: दसमि, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 06:03 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:29 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 12.26
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 31.5
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 18 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: सोमवार
कलिदिना	: 1860274
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: राहु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, स्त्री, धोड़
पक्षी, पेड	: मोर, कडंम्ब वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 2 / 12
चन्द्र वेला	: 6 / 36
चन्द्र क्रिया	: 10 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: विशथी
नित्ययोग	: ब्रह्मा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मेष - भरणी
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Taurus
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 55:31:34 - मृगशिरा
योगी गृह	: मंगल
द्वगुणति योगी	: शुक्र
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: मघा - केतु
आत्म करक - करकांसा	: मंगल - मिथुन
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शनि
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: धनु

धन अरुढ़ा : कन्या

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	106:4:4	गुरु	154:39:6 रितु
चन्द्र	332:30:0	शनि	317:41:43
रवि	37:12:3	युरेनस	288:0:16 रितु
बुध	10:21:28	नेप्टयून	288:56:43 रितु
शुक्र	24:32:41	प्लूटो	231:58:50 रितु
मंगल	353:19:27	नोड	273:35:57

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23डिग्रि.45 मिनिट.15 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	82:18:49	मिथुन	22:18:49	पुर्नवासु	1
चन्द्र	308:44:45	कुंम्भ	8:44:45	शताभिषा	1
रवि	13:26:48	मेष	13:26:48	भरणी	1
बुध	346:36:13	मीन	16:36:13	उत्तर भद्रपाढा	4
शुक्र	0:47:26	मेष	0:47:26	अशविनि	1
मंगल	329:34:12	कुंम्भ	29:34:12	पूर्व भद्रपाढा	3
गुरु	130:53:52	सिंह	10:53:52रितु	मघा	4
शनि	293:56:28	मकर	23:56:28	धनिष्ठ	1
राहु	249:50:42	धनु	9:50:42	मूल	3
केतु	69:50:42	मिथुन	9:50:42	आर्द्र	1
गुलिक	144:42:45	सिंह	24:42:45	पूर्व फालगुनी	4

राशी **नवांश**

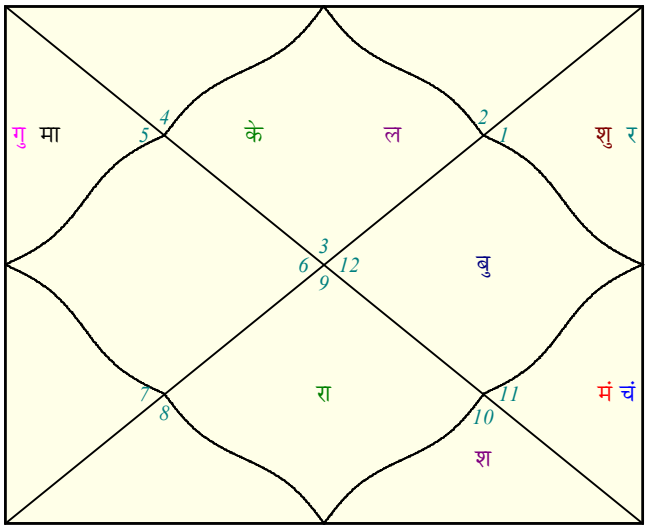

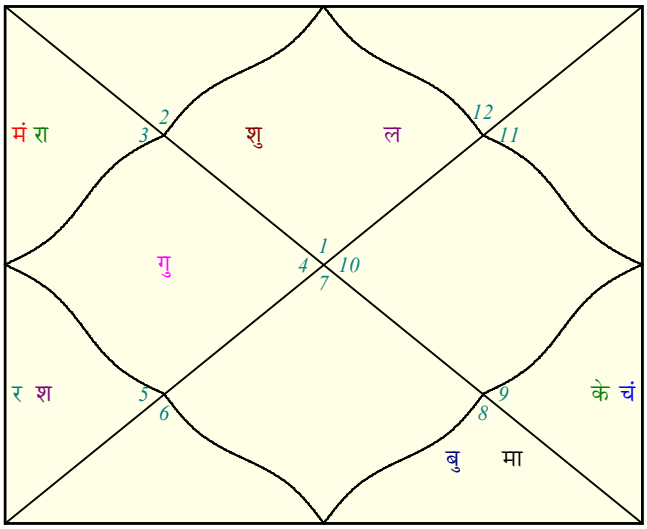

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 15 साल, 2 महीने, 9 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

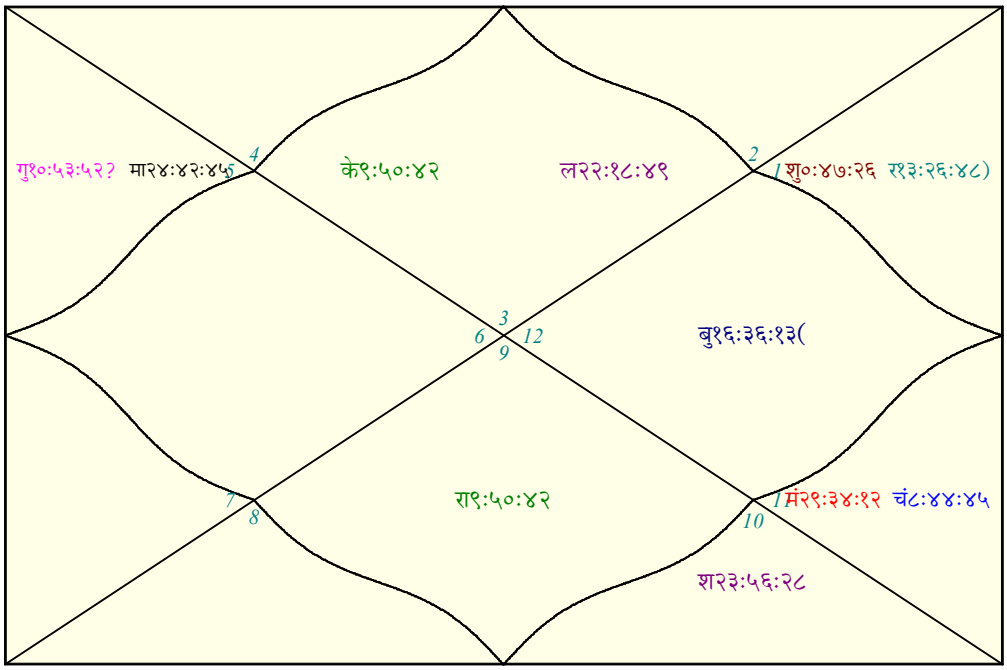

? विपरीत परिस्थिती **)** श्रेष्ट समय **(** क्षीण परिस्थिती **;** सयहोग

नवांशः चं::धनु र::सिंह बु::वृशचिक शु::मेष मं::मिथुन
गु::कर्क श::सिंह रा::मिथुन के::धनु ल::मेष मा::वृशचिक

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 15 साल, 2 महीने, 9 दिन

भाव कुंडली

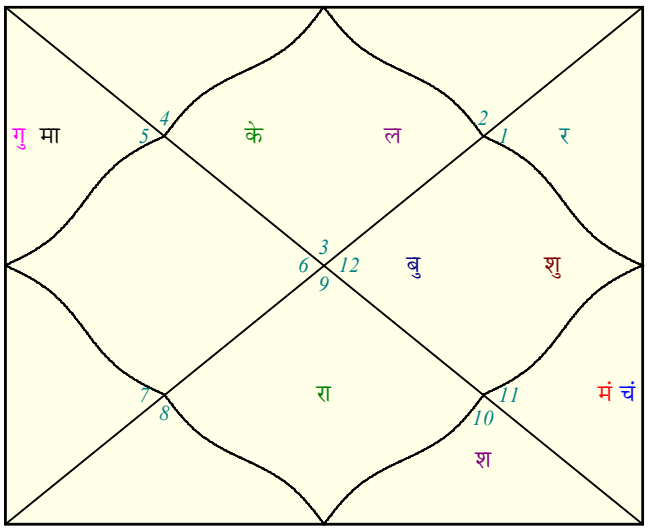

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	67:3:51	82:18:49	97:3:51	के
2	97:3:51	111:48:52	126:33:53	
3	126:33:53	141:18:54	156:3:56	गु,मा
4	156:3:56	170:48:57	186:3:56	
5	186:3:56	201:18:54	216:33:53	
6	216:33:53	231:48:52	247:3:51	
7	247:3:51	262:18:49	277:3:51	रा
8	277:3:51	291:48:52	306:33:53	श
9	306:33:53	321:18:54	336:3:56	चं,मं
10	336:3:56	350:48:57	6:3:56	बु,शु
11	6:3:56	21:18:54	36:33:53	र
12	36:33:53	51:48:52	67:3:51	

नाम : Sample [स्त्री]

सप्ताह के दिन में। : सोमवार

सोमवार में जन्म लेने से आप मधुर भाषि और रोचक होगें । आप ऐसे हालतों में शांन्त रहना चाहते है जहाँ बाकी लोग क्रोधित हो । मन में व्यक्त इरादे होगों ।

जन्म नक्षत्र : शताभिषा

जन्मनक्षत्र शतभिषा है। आपके आश्रय में आए हुए व्यक्ति निराश नहीं होंगे। आप उदार दिल की महिला हैं। आप व्यवहार में सरल और निर्मल हैं इस कारण कोई भी आपकी ओर उँगली नहीं उठा पायेगा। आप रचनात्मक कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाली नारी हैं।

अपने व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों से दूसरे लोगों को परिचित करना आप पसंद नहीं करती। कोई सूक्ष्मदृष्टि से आपके जीवन का अवलोकन करेगा तो ज़रूर पता चलेगा कि आपके जीवन में कुछ कमी है। यह होते हुए भी कमी के कारण को जान नहीं पायेंगे।

कभी कभी स्वभाव से चंचलता प्रकट हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों को नीतिबोध के साथ निर्वाह करने में निपुण हैं। परिवार के अन्य लोगों से अपेक्षा रखना निराशा का कारण बन सकता है। अपने विचार और धारणा को बदलना कठिन बात है। आपके विवाह के बाद आपके पति को बड़ा लाभ होगा।

आचरण से आप निष्ठावान महिला हैं। स्वभाव से आप गर्म मिज़ाज की हैं। इस कारण परिवार के बीच कलुषित वातावरण पैदा होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। किसी कारण पर कुछ दिन पति से दूर रहने का अवसर आ सकता है। वैचारिक मतभेद और पारिवारिक क्लेश बड़ा रूप न ले सकें, इस बात का विशेष ध्यान रखें। आपकी वाणी की मधुरता स्थिति को संभाल पाने में सहायक होगा।

वायु संबन्धी विकारों से बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। मूत्राशय के अन्य रोगों से बचते रहना भी आवश्यक है। रोग के चिन्ह दिखाई देते ही डाक्टरी जांच करवाना और उनकी सलाह को ध्यान में रखना लाभदायी होगा।

तिथि : दसमि

दशमी तिथि में जन्म होने से आप की विशाल मानसिकता प्रशंसनीय होगी। बहुत छोटी आयु से इस कला को हस्तगत करने में बड़ी कीर्ति प्राप्त होगी। आप शान्त भाव धारण करने वाले हैं। आप गंभीर मुखभाव धारण करने वाले हैं। आप अपनी संपन्नता दूसरों को दिखाने में रुचि नहीं रखते। आप स्वगृह और स्वसमुदाय के बीच स्नेह संपन्नता प्राप्त करेंगे। आप आमोद प्रमोद के बड़े पुजारी हैं। आप उदार हृदय, अत्यन्त नम्र व्यवहार वाले और कामी होंगे।

करण : विशथी

क्योंकि आपने बद्र (विशठि) करना में जन्म लिया है आप बहुत शान्तिशील होगों । जीवन के प्रति आपके शक्त रीतियाँ दूसरों के आँखें में आपको हृदयहीन बनाएगों । आप हमेशा उत्तरदयित्वो को अपनाने में खुश रहते है ।

नित्ययोग : ब्रह्मा

आपका जन्म ब्रह्म नित्ययोग में हुआ है। स्वभावतः आप आत्मज्ञान, विज्ञान तथा ज्ञान के धनी होंगे। आत्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास आपके नैसर्गिक गुण हैं। आप सब तरह के लौकिक सुख पसन्द करते तो हैं पर आवश्यकता पड़ने पर आप सब कुछ न्यौधावर करने की तैयारी भी रखते हैं। इसलिए आप दूसरों का आदर प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान और धन दोनों के समान रूप के अधिकारी हैं। आपका जीवन विद्या से जुड़ा रहेगा। एक साथ अनेक विषयों में पारंगता प्राप्त होगी।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है ।

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। विषय सुखभोग में अति अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। सरकारी उच्च अधिकारियों से या अन्य अफसरों से समस्या उत्पन्न होने की संभावना रखते हैं। इस कारण सतर्कता से आगे बढ़ना लाभदायी होगा। हठीली गंभीर मुख मुद्रा और वाचाल स्वभाव दूसरों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनेगा। नृत्य और संगीत के माध्यम से प्रसन्न चित्त रहना पसंद करते हैं। जिस व्यवसाय में कष्ट, लेखन और विद्या का ज़्यादा उपयोग किया जाता है, उस व्यवसाय के साथ आपका गहरा संबन्ध बना रहेगा। इच्छानुसार स्वादिष्ट भोजन सुलभता से प्राप्त होगा। जलाशय से खतरा दिखाई देता है। इस कारण नदी, सागर, तालाब और सरोवर इत्यादि में स्नान करते वक्त सावधान रहें। स्वभाव से विनयशील होने के कारण प्रशंसा के पात्र बनेंगे। हठीले स्वभाव के कारण एकाध बार हानि या अपमान सहन करना होगा। केवल मैं ही सही हूँ, यह धारणा सदैव सही होना संभव नहीं। चर्म विकार से बचकर रहें।

सिंहराशि तीसरे स्थान पर रहने के कारण सुख बांटने वाले व्यक्ति हैं। बदचलन व्यक्तियों से सजग रहना आवश्यक है। समय के साथ साथ धन का अभिमान आपके दिमाग में जन्म लेगा। व्यवहार और विचार दोनों के माध्यम से हिंसात्मक क्रिया करने में ज़रा भी पीछे नहीं हटेंगे। ३६वें से ४२वें वर्ष के बीच जीवन में स्थायित्व आरंभ होगा।

धनु राशि सातवें स्थान पर है। इस कारण सहमित्रों से या भागीदार से मानसिक क्लेश होने की संभावना है। अन्य की क्षतिओं को देखनेवाले और परामर्श करने की आदत वाले मित्र होंगे। उनके साथ मानसिक क्लेश होने की संभावना है। कलह प्रिय मित्रों से बचना आपके लिए आवश्यक है। जीवनसाथी और संतान का सुख उत्तम प्राप्त होगा।

आठवें स्थान में मकर राशि के होने से विद्या प्राप्ति के कार्य में सफलता प्राप्त होगी। गौरव पाने जैसे अनेक सद्‌गुणों के आप मालिक हैं। आप क्रियात्मक स्वभाव के हैं। सुखी और शक्तिशाली व्यक्ति हैं। शास्त्रीय ज्ञान की पूर्ण जानकारी और अनेक विषयों का ज्ञान आपको उपलब्ध होगा। उच्च श्रेणी के अफसरों से प्रीति प्राप्त होगी। विदेशी कारोबार से संबन्ध रहना संभव होगा। महँगे और सुन्दर वस्त्र परिधान के आप बड़े शौकीन हैं। स्त्री और ज़मीन के कारण खुलेआम खर्च करने के आदि हैं। साथ ही साथ अपने सुख का प्रदर्शन करना भी अच्छा लगता है। इस कारण से भी खुले हाथों से धन खर्च करने की आदत आप में पाई जायेगी।

आप चातुर्यपूर्ण कार्यों से और बुद्धिबल से धन कमाने वाले हैं। सट्‌टा बाज़ार आपके लिए योग्य नहीं हैं। जीवन के ४५ और ४६ वर्ष में आर्थिक नुकसान होगा। जीवन के २४,२९,३३,३५,४१,४७, ५९,६० और ६२ महत्वपूर्ण वर्ष रहेंगे।

लग्नाधिपति दसवें स्थान पर हैं। इस कारण पिता के माध्यम से भाग्योदय का लक्षण है। स्वपुरुषार्थ और परिश्रम के माध्यम से राजकीय सम्मान योग उपलब्ध है। जीवन को आदर्शवादी बनाने में माता की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मित्र, बन्धु व राजपक्ष से सहयोग प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करना होगा।

केतु प्रथम स्थान पर रहने से आपका चेहरा सौन्दर्यवान और प्रसन्न रहेगा। आपके स्वभाव से हर कोई आकर्षित रहेगा।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भावाधिपति के नव में स्थान पर रहने से संपत्ति, बुद्धिमता, कार्यकुशलता, धैर्यशीलता इत्यादि गुणों से संपन्न होंगे। बालावस्था में स्वास्थ्य संबन्धी कोई समस्या का सामना करना होगा। समय के बीतने पर स्वास्थ्य में सुधार होगा। धार्मिक और पुण्य स्थलों पर जाने की संभावना है। सब प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होंगे। वाहन की सवारी सदा सावधानी पूर्वक करें। जीवन में एकाध बार दुर्घटना का सामना करना अनिवार्य सा जान पड़ता है।

क्योंकि मंगल गृह और दूसरी देव एक ही स्थान पर उपस्थित है आप वकालत और न्याय से सम्बधित क्षेत्रों में सफल हो सकते है ।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव सातवी भाव से प्रभावित है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने के कारण व्यापार क्षेत्र में क्रय-विक्रय के कार्य में अति निपुणता प्राप्त होगी। अन्य लोगों के लिए साहसपूर्ण कार्यों में जुटने के विरुद्ध हैं। आपकी आत्मीयता के प्रति अन्य लोगों के मन में शंका-कुशंका जाग्रत होगी। आप के बारे में झूठी धारणा उत्पन्न होगी। स्वपुरुषार्थ से ही संपत्ति व सुख अर्जित करने में सफल होंगे।

गुरु तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण आप सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करनेवाले व्यक्ति बनेंगे। हर कार्य और संभावित घटना को अनेकान्त दृष्टि से समझने की क्षमता आप में रही है। अन्य लोग आप से आकर्षित होंगे। आर्थिक दृष्टि से निर्बल होते हुए भी हर व्यवहारिक कार्य बड़ी सुन्दरता से निपटाने के आदी हैं।

तीसरे भाव के उपस्थित शुभ गृह आपके भाई - बहन को दीर्घयु प्रधान करता है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दसवें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ लोगों से और श्रेष्ठ स्थानों से अनेक प्रकार का समर्थन प्राप्त होगी । आप रासायनिक शास्त्र में अभिरुचि रखनेवाली महिला हैं। आप पंचेन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख सकेगी। यह स्वर्ण के साथ सुगंध के मिश्रण जैसी बात होगी। आप आत्मसंयमी महिला हैं। इस कारण सदा आत्म संतोष की अनुभोक्ता हैं। स्त्री में जब आत्मसंयम और आत्मसंतोष एक साथ प्रकट हों तो दिव्यता उसके साथ रहती है। स्वपुरुषार्थ से अर्थात परिश्रम से आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि हो सकती है।

चौथे स्थान का स्वामी बुध है। आप समाज मध्य तत्वचिंतक मानी जायेंगी। आप बुद्धिमान और आदर्शवान महिला के रूप में पहचानी जायेगी। आप को समाज के लोगों से सम्मान प्राप्त होगी । योग्य प्रोत्साहन प्राप्त होने पर महिला जगत की श्रेष्ठ नारी बन सकती है। आप में अनन्य कार्यशक्ति छिपी है। सफलता आप का साथ देगी। अध्ययन-मनन का अभ्यास जारी रखने पर विदुषी के रूप में विख्यात होना संभव है।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से विद्या विषयक कार्यों से प्राप्त हुआ ज्ञान और स्वानुभव आप पुस्तिका के रूप में अन्य को समर्पित करके श्रेष्ठ कार्य करने की संभावना रखते हैं। धन और निपुणता आप की भविष्य की पीढ़ी को निश्चित प्राप्त होगी। 'ग्रंथकर्ता महादक्षो बहुपुत्र धनान्वितः।।'

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

छठ्ठा भावाधिपति के नवमें स्थान पर होने से कार्यक्षेत्र में प्रगति और गिरावट दोनों का अनुभव होता रहेगा। बिल्डिंग मेटिरियल, भवन निर्माण और पैतृक व्यवसाय के माध्यम से लाभ प्राप्त करना सरल होगा। जीवन साथी के भाई-बहन के स्वास्थ्य की चिन्ता होना संभव होगी। अथवा उनसे मन मुटाव हो सकता है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुण दोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। आप पति-भक्त और पतिव्रता स्त्री हैं। निष्कलंक पति प्रेम की पात्र बनेंगी और साथ ही पूरे परिवार को आपसे आनंद और शान्ति का अनुभव होगा। आप का असाधारण प्रेम, सत्यशीलता और समर्पणभाव पूरे परिवार के मन को जीत लेगा। आप के आगमन से पतिगृह में प्रगति होगी। आप के भाई आप से दूरदेश या विदेश में निवास करेंगे। नवीन प्रकार के वस्त्र परिधान, आभूषण अलंकार और कलात्मक कार्यों में अभिरुचि रखनेवाली स्त्री हैं। पत्र व्यवहार में अति निपुण हैं। इसके अलावा हर कार्य अति चतुरता से निपटाने की कला में निपुण हैं। थोड़े से परिश्रम से साहित्य क्षेत्र में ज़्यादा सफलता प्राप्त करने की संभावना है।

पूर्व दिशा से जीवनसाथी प्राप्त होने की संभावना दिखाई देती है।

राहु आपकी सातवीं राशि में स्थित है। भविष्य में दुखी होने की परिस्थिति की संभावना है। आप को अपने कुल को लगते कलंक से बचाना होगी। पर आपको स्त्री सहज ध्यान, भाव और आत्मनियन्त्रण होने से स्वयं रक्षा प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होगी। आप विवाह से संबन्धित समाज के सभी नियमों का पालन करने को तैयार नहीं होगी। उस स्वतन्त्रता पर आपकी शिकायत की जायेगी। विवाह में देरी हो सकती है। आपको भोजन के क्रम में ज़रा ध्यान देना आवश्यक होगा।

सूर्य गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपके पति आत्मीयभाव के और परिपूर्ण मानसिक परिपक्वतावाले श्रेष्ठ पुरुष होंगे। आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा और इस कारण आपको भाग्यशाली माना जा सकता है।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद होगी। यह निश्चित है।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पति और आपके बीच बार-बार मनःदुख होने की संभावना है। छोटे झगड़े
महास्वरूप न ले पायें इसकी आपको सावधानी रखनी होगी। परंपरा का त्याग शीघ्रता में न करना ही लाभप्रद होगा।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि रही हैं इस कारण अनेक दोषमय फल से मुक्त रह पाएगी। अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आनंद का अनुभव होगा।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से आप की आयु औसत आयु से अधिक रहेगी। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ की संभावना है। जीवनसाथी के प्रति शंका-कुशंका जाग्रत होगी। आकस्मिक रूप से धनी बनने का स्वप्न पूरा नहीं होगा। दांपत्य की मधुरता के लिए अधिक प्रयत्न करना होगा।

शनि आठवें स्थान पर रहा है। आर्थिक स्थिति निर्बल होने पर भी विवाह के बारे में उत्सुकता पैदा होगी। मौलिक विचार के व्यक्ति हैं। अपनी विचार धारा सिद्ध करने में निपुण हैं। जीवन में निर्बलता और दुःख उत्पन्न होने की संभावना रखते हैं।

क्योंकि आठवों देव आठवी भाव में ही उपस्थित है दीर्घयु से सम्बधित निषेधार्थक विषय नहीं है ।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति आठवें स्थान पर है। दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का तथा कष्ट और परेशानी की संभावना है। एक स्त्री होने के नाते सहनशीलता से हर मुश्किल का सामना करना आपके लिए उचित कार्य बनेगा। इच्छानुसार पिता के समीप निवास या सहारे से वंचित रहना पड़ेगा। परिश्रम से अधिक फल का अनुभव होती रहेगी ।

नौवे भाव में चन्द्र स्थित है। इसलिए आपको भाग्य एवं ऐश्वर्य प्राप्त होगा। सन्तानों, मित्रों एवं संबन्धियों की कमी नहीं होगी। आप हृदय से दयालु हैं और हमेशा आदर्शवान रहे हैं। आदर्श और उदारतापूर्ण व्यवहार से सुख और शंति का अनुभव होगा। तीर्थ यात्रा व पुण्य कार्यों में रुचि होगी।

नौवे भाव में मंगल की उपस्थिति होने से आप स्वतन्त्र विचार के हैं और साथ ही साथ अधिकार के रक्षक भी हैं। यह होते हुए भी आप अपने माँ-बाप के प्रति अविनयपूर्ण व्यवहार करने वाले हैं। फिर भी जनसमुदाय के बीच दानशील और उदारमय व्यवहार से जाने जायेंगे। 'हिंसा विधाने मनसः प्रवृत्ति.....' हिंसा व क्रूरता से परहेज न होगा।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को तीसरे भाव में स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों केअनुसार आपको अपने भाईयो के द्वारा संतोष प्राप्त होगी । आप धैर्य शाली और विश्वास रखने वाली है । आप वाग्मी और विश्वस्त है ।

दसवी भाव मीन राशी है । यह एक जलरुपी चिनह् है जो गुरु के नियंत्रण में है । यह मत्स्थ क्षेत्र, द्रावक, विदेशी व्यापार, तेल, समुद्र,

वकालत, धार्मिक कार्यक्रमों, वकील, नौविधा, पोत परिवहन प्राध्यापक और बैंक के मालिक को सूचित करता है यह भी सूचित करता है कि आप समुद्रीय उत्पन्न, समुद्रीय जीव विज्ञान, पछली पकडने का काम और जल शुदीकरण में सफलता पा सकती है ।

बुध गृह दसवी भाव है और सूचित करता है कि आप उधोग में अपने आन्तरिक शक्ति और बुद्विवैभव को महत्व देगी। उधोग क्षेत्र में उत्पन्न मुसीबतों को अपनी आयोजना के जरिए धैर्यपूर्व सामना करेगी । बुध गृह मन की रसिकता और भावना को नियंत्रित करता है । कला विज्ञापन,पत्रिका प्रकाश आदि उधोग क्षेत्र आपके लिए उचित है ।
क्योंकि बुध गृह दसवी भाव में है आप होशियार होगी और एक श्रेष्ठ उधोग को अपनाएगी । आप अपने धैर्य को प्रकट करेगी । आपको अनेक पुरस्कार, प्रशंसा पत्र, और अंलकार (गहने, वस्त्र आदि) प्राप्त होगी । आप व्यापार - व्यवसाय, दलाल प्रतिनिधि, वाजिज्य व्यवसाय संस्थापन आदि में काम कर सकती है । बुध गृह साहित्य और शास्त्र की ओर झुकाव प्रकट करती हे । यह आपको शास्त्र, हिसाव - किताब गणितशास्त्र और कानून में रुचि प्रधान करेगी ।

मीनराशी में उपस्थित बुध गृह आपको किसी भी कार्य पर बहुत समय तक बैढने की क्षमता देती है । आप एक सफल मुनीम, अर्थिक व्यवस्था कर्यमचारी, लेखा परीक्षक, और कर समाहती बनेगी । सरकारी सम्बधिक उधोग होगी कर, प्रथा और अन्वेषण ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

वैज्ञानिक, तन्त्रविधा (गूढता), वायु मार्ग से यात्रा, ज्योतिष, अस्पताल में सहायक, जन गणना, शेयर- बाजार, जेल विभाग, हस्तलेखों का भाषान्तर करना, रसायनशाला, चमशोधनालय, ठगना चलमुद्रा ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च स्थान पर खड़ा है । सफलता आपके लिए निश्चित है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ स्थान और सम्मान दोनों का योग है। अपनी सत्यवादिता और निष्पक्षता के कारण लोक समर्थन प्राप्त करेंगे। आप भाग्यवान व्यक्ति हैं। हर कार्य में निपुणता प्राप्त होगी। आप एक विश्वसनीय और वफादार व्यक्ति हैं।

सूर्य ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपके मित्र आपके स्वाधीन शक्ति को उपयोग में लेंगे। आप संतोष और सामर्थ्य के समानता से मालिक बन पायेंगे। आपके पिताजी को अनेक क्लेशों का सामना करना पड़ेगा। आप दीर्घ आयु के हैं।

शुक्र ग्यारहवें स्थान पर रहा है। श्रेष्ठ मित्र जीवन में उपलब्ध होंगे। आनन्दित करनेवाली संतान का योग है।

ग्यारहवी देव बिकोण स्थान पर है ।आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से जीवन के प्रारंभकाल में अनेक कष्टों का सामना करना होगा। अनिष्ट घटनायें घटने की संभावना है। अपनी मालिकी की कोई वस्तु कठिनता से प्राप्त होगी। फिर भी अन्य लोगों से लाभ और संरक्षण प्राप्त होगा। अन्य बच्चों से अपनी संतानों के तुल्य स्नेह और सहयोग करने के आदी होंगे।

अनुकूल समय

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	24-08-2009	07-03-2012	अनुकूल
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014	उचित
गुरु	केतु	13-06-2014	20-05-2015	अनुकूल
गुरु	शुक्र	20-05-2015	18-01-2018	अनुकूल
गुरु	रवि	18-01-2018	06-11-2018	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	06-11-2018	07-03-2020	अनुकूल
गुरु	मंगल	07-03-2020	11-02-2021	अनुकूल
गुरु	राहु	11-02-2021	07-07-2023	अनुकूल
शनि	बुध	10-07-2026	19-03-2029	अनुकूल
शनि	गुरु	25-12-2039	07-07-2042	अनुकूल
बुध	केतु	03-12-2044	30-11-2045	अनुकूल
बुध	शुक्र	30-11-2045	30-09-2048	अनुकूल
बुध	रवि	30-09-2048	06-08-2049	अनुकूल
बुध	चन्द्र	06-08-2049	06-01-2051	अनुकूल
बुध	मंगल	06-01-2051	03-01-2052	अनुकूल
बुध	राहु	03-01-2052	22-07-2054	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल

27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

१८ उम्रे से लेकर ५० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	शनि	24-08-2009	07-03-2012	अनुकूल
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014	अनुकूल
गुरु	केतु	13-06-2014	20-05-2015	अनुकूल
गुरु	शुक्र	20-05-2015	18-01-2018	उचित
गुरु	रवि	18-01-2018	06-11-2018	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	06-11-2018	07-03-2020	अनुकूल
गुरु	मंगल	07-03-2020	11-02-2021	अनुकूल
गुरु	राहु	11-02-2021	07-07-2023	उचित
शनि	शुक्र	28-04-2030	28-06-2033	अनुकूल
शनि	राहु	17-02-2037	25-12-2039	अनुकूल
शनि	गुरु	25-12-2039	07-07-2042	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल विवाहायोग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	मंगल	19-06-2006	07-07-2007	अनुकूल
गुरु	शनि	24-08-2009	07-03-2012	उचित
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014	उचित
गुरु	केतु	13-06-2014	20-05-2015	अनुकूल
गुरु	शुक्र	20-05-2015	18-01-2018	अनुकूल
गुरु	रवि	18-01-2018	06-11-2018	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	06-11-2018	07-03-2020	उचित

गुरु	मंगल	07-03-2020	11-02-2021	उचित
गुरु	राहु	11-02-2021	07-07-2023	अनुकूल
शनि	बुध	10-07-2026	19-03-2029	उचित
शनि	केतु	19-03-2029	28-04-2030	अनुकूल
शनि	शुक्र	28-04-2030	28-06-2033	अनुकूल
शनि	रवि	28-06-2033	10-06-2034	अनुकूल
शनि	चन्द्र	10-06-2034	09-01-2036	उचित
शनि	मंगल	09-01-2036	17-02-2037	उचित
शनि	राहु	17-02-2037	25-12-2039	अनुकूल
शनि	गुरु	25-12-2039	07-07-2042	उचित
बुध	केतु	03-12-2044	30-11-2045	अनुकूल
बुध	शुक्र	30-11-2045	30-09-2048	अनुकूल
बुध	रवि	30-09-2048	06-08-2049	अनुकूल
बुध	चन्द्र	06-08-2049	06-01-2051	उचित
बुध	मंगल	06-01-2051	03-01-2052	उचित
बुध	राहु	03-01-2052	22-07-2054	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
23-11-2007	10-12-2008	उचित
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित
14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल

18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पजता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014	अनुकूल
शनि	बुध	10-07-2026	19-03-2029	अनुकूल
बुध	केतु	03-12-2044	30-11-2045	अनुकूल
बुध	शुक्र	30-11-2045	30-09-2048	अनुकूल
बुध	रवि	30-09-2048	06-08-2049	अनुकूल
बुध	चन्द्र	06-08-2049	06-01-2051	अनुकूल
बुध	मंगल	06-01-2051	03-01-2052	अनुकूल
बुध	राहु	03-01-2052	22-07-2054	अनुकूल
बुध	गुरु	22-07-2054	27-10-2056	अनुकूल
बुध	शनि	27-10-2056	07-07-2059	अनुकूल
केतु	गुरु	25-06-2063	31-05-2064	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	उचित
06-11-2019	30-03-2020	उचित
01-07-2020	20-11-2020	उचित

14-04-2022	22-04-2023	उचित
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
29-03-2034	06-04-2035	उचित
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
14-03-2046	22-03-2047	उचित
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। कुंडली में ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा -फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों को जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में आप उत्साही महिला बनेंगी। श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की संभावनायें हैं। अन्य की अपेक्षा आप को ज़्यादा सफलता मिलती दिखाई देगी। आप जो कुँवारी हों तो विवाह का योग निकट है। इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। संतान प्राप्ति का योग भी निकट है। जीवन साथी से सुखद व्यवहार होने की संभावनायें हैं। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। घर के बड़ों या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूलभाव मिलती रहेगी। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहनी पड़ेगी। स्वजनों से वियोग व्यथा सहना होगी । ई.एन.टी डाक्टर का उपदेश लेकर उन अव्यवों का उपचार करना

अच्छी होगी । कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। परिश्रमशील महिला का स्वभाव होने पर श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। गुरु दशा का आरंभकाल दोष युक्त होते हुए भी उसका अन्तिम समय सुखद और लाभदायक होगा है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

∇ (20-05-2015 >> 18-01-2018)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनानेवाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्याननिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से रुकावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

∇ (18-01-2018 >> 06-11-2018)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। समूह के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

∇ (06-11-2018 >> 07-03-2020)

बृहस्पति दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप को लौकिक सुख की अनुभूति होगी। शत्रुओं के मनोभाव में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देगा। उनसे प्रेमपूर्ण सहकार प्राप्त होगा। बहुत लोग आपकी सहायता के लिए निकट आयेंगे। आपको अपनी योग्यता दिखानेवाले प्रमाण पत्र भी प्राप्त होंगे। विवाह संबन्धी कार्यों अथवा संतान विषयक कामों में मन चाही सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (07-03-2020 >> 11-02-2021)

बृहस्पति दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको आश्चर्य जनक शक्ति एवं योग्यता प्राप्त होगी। मनोबल में भी वृद्धि होगी। शत्रुओं को जीतने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। आप प्रसिद्धि और स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। आप सुख और शाँति से दिन व्यतीत कर पायेंगे। पूर्व में किसी डाक्टर ने सर्जरी करवाने की सलाह दी होतो, इस समय में यह काम हो सकता है।

∇ (11-02-2021 >> 07-07-2023)

बृहस्पति दशा में राहु की अन्तर्दशा में अनेक विरोधी व्यक्ति क्रियाशील बनेंगे। सत्कार्य के बदले शत्रुभाव उत्पन्न होगा। मानसिक उद्वेग उत्पन्न करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। वर्तमान का निवास स्थल बदलने की इच्छा प्रकट होगी। अपने संबन्धियों का स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। इस कारण अनेक तरह की कठिनाईयों का सामना करना होगा।

शनि दशा

शनि दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में बुद्धि कुंठित होती है, अनेक प्रकार के मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और सुख दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है। सरकार या उच्चधिकारियों से धन मिल सकती है। अनेक सेवक और सहायक आपके चारों ओर रहेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार और सन्तानों का सुख न होने की संभावना है। भिन्नप्रश्नों से मन चंचल रहेगी। पैरों पर कोई पीड़ा होने की संभावना है। हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार कर्म फल भोगती है। इस काल में सुख-दुख मिश्रित अनुभव होते हैं। श्रेष्ठ गृहनायिका का पद संभालने का समय है। जीवन के मध्यम काल के बाद जब शनि दशा होती हैं तो अपनी आयु से कम आयु के विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ निकट का संबंध स्थापित होने की संभावनायें रहती है। इस संबन्ध से अयोग्य व्यवहार में बढावा होने की संभावना होने से जागृत रहना लाभदायक होगी । अपनों से नीचे के लोगों के माध्यम से धन लाभ होगी।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

∇ (07-07-2023 >> 10-07-2026)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप अपने घर में और समूह के बीच अनेक क्लेशों का अनुभव करेंगे। मानसिक और चिंतन शक्ति क्षीण होगी। इस कारण आपके दोस्त सोचेंगे कि आप में मानसिक परिवर्तन आ गया है। निवास स्थान से दूर की यात्रा संभव है। निम्न वृत्ति के लोग आप से काम कराकर लाभ उठाने की कोशिश करेंगे।

∇ (10-07-2026 >> 19-03-2029)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप का भाग्य चमक उठेगा। आप अपनी आशाओं और लक्ष्यों की पूर्ति करेंगे। आप को जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और मान्यता भी प्राप्त होगी। आप का कर्तव्यबोध प्रशंसनीय होगा। आपको अविचारित मार्ग से कोई सहायता और मार्गदर्शन मिलेगा जिससे आप आगे बढ़ सकेंगे। आपके कार्यक्षेत्र से बदली होने की संभावना है। बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल समय है। शुभ कामों के संपन्न होने की पूरी संभावना है।

∇ (19-03-2029 >> 28-04-2030)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

∇ (28-04-2030 >> 28-06-2033)

शनि की दशा में शुक्र के अपहार में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबन्ध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (28-06-2033 >> 10-06-2034)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों

के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबन्ध में बुरा प्रभाव ड़ालेगा। आप अपनी नौकरी में उदास हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

∇ (10-06-2034 >> 09-01-2036)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्यु तुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

∇ (09-01-2036 >> 17-02-2037)

शनि की दशा में मंगल के अपहार में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

∇ (17-02-2037 >> 25-12-2039)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में एक गहरे कुए में गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं को आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आत्मीय और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेगा।

प्रारंभ से **07-07-2042**

बुध दशा

इस दशा में आने से बड़े लोगों की सहायता आपको मिलेगी। वे लोग आपसे श्रेष्ठ बर्ताव करेंगे। ज़मीन, जानवर, चिडियां और अच्छे साथियों से आनन्द प्राप्त होगी। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगी। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण होते रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा शायद कभी हो जायेगी। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय युक्त रहेगी। साधु-संत् पुरुषों के सेवा कार्य में अति आनंद प्रदान होगी। एक गृह नायिका के स्थान को शोभा दिलानेवाले अनेक कार्य में सफलता प्राप्त
होगी। नये मकान के निर्माण की संभावना है। भूमि के संबन्धी कार्यों में जुटने से लाभ होगी।

प्रारंभ से **07-07-2059**

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण अति आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने को किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। महिलाओं में धीरजशीलता ज़्यादा होती है। इसलिए घबराइये नहीं। वाद विवाद और बदनामी का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता हैं तो धन, पारिवारिक सुख देनेवाला होता है। बालावस्था में इस दशा काल में पढ़ाई में विक्षेप का सामना करना पड़ती है। दूर देशागमन की
अनेक संभावनायें हैं। मित्रजन से अनेक समस्या पैदा होगी। सुख और शांति क्षीण होगी। धन नाश का समय है। भक्तिपूर्ण जीवन आश्वासन दिलाती है। अन्य महिलाओं के कारण अन्य लोगों से संबन्ध बिगडेंगे। मानहानि सर्वसाधारण बात बनेगी। कुछ काल बाद आनंदमय वातावरण की प्रतीक्षा कर सकती हैं।

ऊपर बताई गई बातें केतु दशा के प्रभाव का सूचना मात्र है। इससे डरना व्यर्थ होगी । पुरुषार्थ पूर्ण प्रयत्न से मन को बस में रखकर ईश्वर के प्रति निष्ठा रखना बुद्धिपूर्ण कार्य होगी । पुरुषार्थ से आत्मबल में वृद्धि होती है। यह जीवन की सफलता का एक मात्र मार्ग कहा जाता है।

प्रारंभ से **07-07-2066**

शुक्र दशा (अथवा भृगु दशा)

पहले किए हुए अच्छे कर्मों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगी। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में की जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल पायेंगी। भिन्न प्रकार की सवारियों में कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगी। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या आपको बाधा देगी। संबन्धियों से मानसिक अथवा शारीरिक तौर से अलग रहनी पड़ेगी। कभी कभी मन की अशान्ति का अनुभव होगी। विवाह की बात चलती हो तो अल्पकाल में विवाह सुनिश्चित होगी। यह दशा पति के लिए सुखमय होगी। सुखद दांपत्यजीवन और संतान प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ समय है।

जन्म कुण्डली में शुक्र के संग शत्रु ग्रहों का सहवास होने से संपूर्ण शुभ फलों से वंचित रहना पड़ेगा। परंपरा से भिन्न प्रकार की मित्रता हो सकती है। सतर्क रहें लाभदायी होगा।

मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। गुप्त रोगों का शिकार बनना पड़ जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण में क्षीणता उत्पन्न होगी। लैंगिक शक्ति दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती हुई दिखाई देगी। अपमान और धन नाश नीच मित्रों के माध्यम से हो सकता है। इस कारण सावधानी से हर कदम उठाना बुद्धिगम्य माना जायेगा। जहाँ से आशा की प्रतीक्षा रखेंगे वहाँ निराशा ही उपलब्ध होगी। जिन से मदद की आशा होगी वे विरुद्ध व्यवहार करेंगे। संक्षेप में सहयोग और सहानुभूति का अभाव दिखाई देगा।

ग्रह दोष और उपाय

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में नवमा स्थानपर रहा है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

उपचार

जब तक आपके कुंडली में कुज दोष नहीं हैं आपको किसी तरह के कोई उपायों को करने कि जरुरत नहीं हैं।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपने पहले प्रस्ताव का स्विकार करके उसमें सें आपके लिए जो अच्छा है वह ढुंढना चाहिए। आशावादी रहने सें सुखी संबंध बरकरार रह सकते है। आप कुछ भाग्य मिलने कें लिए भाग्यशाली हो सकते है, किन्तु आपने पैसो के व्यवहार में और व्यावसायीक मामलों में सावधता सें रहने की आवश्यकता है। बुरी संगत और प्रभाव टालने सें शांत और निरोगी जीवन बनायें रख सकते है। आपनें निजी पसन्द का परिवार जीवन पर प्रभाव पडने नही देना चाहिए। शांत स्वभाव रखने सें आपकें संबंध सुखी बन सकते है। आपका साथी संवेदनशिल और सूचक स्वभाव का रहेगा। आपने साथीका स्वास्थ्य और बच्चो संबंधि मामलों पर जादा ध्यान देना चाहिए। आपको उपरी शरीरके विकार कम रहेंगे।

ताकदवर राहु सुखी वैवाहिक जीवन दर्शाता है।

लाभदायी ग्रह गुरू का आपकी जन्मकुंडलीपर प्रभाव है,जो उपर दिये गयें लाभ बढाता है और अशुभ प्रभाव कम करता है।

राहु दोष कें उपाय

राहु कें अशुभ परिणाम कम करनें हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है।

सर्पयंत्र लेकर समर्पीत भाव सें पहनें।

वैदिक प्रतिष्ठा पद्धती सें नवग्रह देवता की रचना करकें क़ाली दाल लेकर उसका राहु को भोग दिखाये (दक्षीण-पश्चीम बैठकर चेहरा पूर्व दिशा में रखे)

छिलको वाली कुछ प्रमाण में काली दाल लें और उसे सोने से पहले तकिया कें निचे रखे। आपनें उस दाल कों सुबह सिर कें सभी ओर गोल घुमाकर कौवे कों डालना चाहिए। यह लगातार ९ दिन करें, और १० वे दिन भगवान शिव या देवी कें मंदीर में स्वेच्छा सें दान करकें दर्शन लें ।

कुछ मंदीर में बरगद का पेंड और निम का पेंड बढता है, और उसके पास नाग देवता होती है। ऐसे देवता कों हलदी का अभिषेक करकें परिक्रमा करें।

सुब्रमण्यम स्वामी को बेल पत्री अर्पण करें।

जीवन में राहु का परिणाम कम करनें हेतू हररोज निचें दिया गया श्लोक पढें।

आस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रत्याधिदेवता सहिथम राहुग्रहम
ध्यायामी अवहायामि.

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनि
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायि सुप्रदा
सर्व भुतादि दोषाया दोषाया
राहुर ग्रह निपीदिथात नक्षत्रे
राशोउ जाथम सर्वनाम माम
मोक्षया मोक्षया स्वाः

केतु दोष

आप नियंत्रीत खर्चा करके आर्थीक स्थिरता प्राप्त कर सकते है। साथी और बच्चो कल्याण के विचार आपको सताते है। आपको प्यारे इन्सान को आधार और हिंमत देनी पडेगी। अच्छी मित्रता आपका विश्वास बढाएंगी, और धोखा देने वालो को पहचानने सें जीवन सुखी बनेगा। आप दृढता और प्रामाणीकता सें अडचनें और व्यावसायीक दबाव पर जीत हासील कर सकते हो। आपकों बच्चो की सफलता पर सुख अनुभव होगा। आप हड्डी और सन्धि (जॉईंट) के रोगोपर उपचार लेना पड सकता है।

केतु दोष हेतू उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है।

सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखे। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार ९ दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में शाम में दर्शन लें। स्वेच्छा सें दान करकें परिक्रमा करें।

केतुकवचयंत्र लेकर समर्पीत भाव सें पहने।

केतु कें लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान. उनकें मंदीर में दर्शन लेके स्वेच्छा सें दान करें।

घरमें सुदर्शन चक्र रखे और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतू निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने सताभिषा नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति राहु है । आप अपने रायों को धैर्यपूर्व दूसरों के सामने प्रकट करेगों । यह आपके स्थिर दोस्ती को बनाए रखने में मुसीबत पढ़ेग ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल होगा । सताभिषा नक्षत्र होने के बावजूद शनि, केतु और सूर्य दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके मानसिक दाश और कार्यों प्रत्यक्ष परिवर्तन होगा । इस समय आपके मानसिक दाश और कार्यों में प्रत्यक्ष परिवर्तन होगा । आप अपने गुणों को दूसरों के सामने प्रकट करने के लिए कोई परिश्रम नहीं करेगे । वैवाहिक जीवन को शान्त रखने के लिए अपने रुचि- अरुचि पर कुछ समझौता करना चाहिए ।

कुम्भ राशी जन्म राशी का अधिपति शनि है ।दूसरे लोगों पर उपस्थित विश्वास पर व्यक्त दृष्टिकोण होना चाहिए और अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए उत्सुक रहना चाहिए । अपना विचार और प्रवर्ति किस प्रकार दूसरों पर प्रभावित हो रहा है, इस के बारे में जानना उच्चित होगा । अशविनि, कृतिका उत्तर फालगुनी(सिंह राशी),हस्ता,और चित्रा नक्षत्र (सिंह राशी)शुभ कार्यों के लिए अनुकूल नहीं है ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

इस प्रतिकूल दाश में अयप्पा और सूर्य देव की प्रार्थना करना उचित होगा । श्रेष्ठतर परिणाम के लिए शताभिषा जन्म नक्षत्र और सम्बधित नक्षत्र जैसे स्वाती और आर्द्र नक्षत्र के दिवस पर सर्प देव की प्रार्थना करना चाहिए । अपने योग्यता के अनुसार शताभिषा नक्षत्र के दिवस पर दान देना शुभ कार्य है ।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए नक्षत्र का अधिपति राहु की प्रार्थना करना चाहिए । शनिवार को चावल डोल देना उचित है ।

शनि गृह के अधिपति को प्रसन्न करने के लिए धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करना उचित है । शनिवार के दिन चावल डोल देना चाहिए । लाल, नीला और काले रंग के वस्त्रों को पहनना शुभकारक माना जाता है ।

शताभिषा नक्षत्र का देव वरुणा है ।वरुणा को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊँ वरुणास्यान्तम् भनमसि वरुणस्य
स्कम्भसर्जनीस्त वरुणास्या ऋत्त सदन्यासि
वरुणस्य ऋतसधनमसि वरुणास्य
ऋतसधनमासिद

२ ऊ वरुणाय नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः शताभिषा का जानवर गोड का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्वि प्राप्त होगा ।शताभिषा का औधोगिक पेड,कडंभ पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी, मोर को पीड़ा नहीं देना चाहिए ।शताभिषा नक्षत्र का मूलतत्व आकाश है ।

अष्ठदिपालक की पूजा करना चाहिए और प्रकृति नाशक और प्रदूषण कार्यों को रोक देना चाहिए ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :शनि

आपका शनि दाश 7-7-2023 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र शताभिषा है । ප्ङ्ख्न्नण शनि भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुणडली के गृहो के अनुसार, आपको शनि दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजराना पडेगा । अपको अप्रत्याशित रुकावटों औप मुसिबतों का सामना करना पडेगा । आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते । अनावश्यक परेशानी आपके नीद के लिए हानिकारक होगा ।

शनि दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब शनि प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब शनि कमजोर है, अक्सर जीवन में आने वाले मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करना पडेगा । आपको हमेश परिज्ञान के साथ विचारों कों व्यवस्था करने और उसे आचरण की क्षमता नहीं होगा । इसलिए वित्तसम्बधी नष्ट होगा ।

इस समय बड़ों के साथ आपका रिशत अस्वाभविक होगा । सामान्य रुप से आपके सामाजिक लेन देन में आवेश की कमी मेहसूस होगा । भोजन स्वास्थ्थकर हो, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय रोगें से मुकाबला करने की शक्ति कम हो जाएगा । आप रोगें से जल्दी विलंभ नहीं होगें । शनि के बुरे प्रभाव से आपको बहुत अधिक सहना पडेगा ।

जब शनि प्रतिकूल स्थिति में है तो आपके प्रायोगिक चिन्तन शक्ति कम हो जाएगा । आपको अनावश्यक मानसिक परेशनियों से दूर रहना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शनि प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शनि को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनि दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

नीला और काला रंग शनि गृह के लिए प्रिय है । इन रंगे के वस्त्र पहनने पर आप शनि गृह को शान्त कर सकते है । हानिकारक प्रभावें को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

देवता भजन

शनि दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव और श्री अय्यप्प भगवान का पूजा करना चाहिए । कुछ ज्योतिषयों ने भगवान हनुमान देव को पूजा करने का राय प्रस्तुत किया है । केरल के ज्योतिषियाँ भगवान अथ्यप को पूजा करने का राय रखता है । काला या नील वस्त्र पहनकर वृत लेकर अय्यप्प भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक शनि गृह को शान्त कराने का मार्ग है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद शनि की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु (इस प्रार्थना के बाद)
कृष्णाय, वासुदेवाय नमामि हरये सदा
मन्दस्यानिष्टसंभुतम् दोषजातम् विनाश्ये (इस प्रार्थना को भी आलापन करें)

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना ।
अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए । इस समय श्री अय्यप्प भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक आदि उच्चित है । शनिवार के दिन पीपल पडे की परिक्रमण करना लाभदायक है । समय उपवास रखते समय अय्यप्प मंदिर में दर्शन करना चाहिए ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनि का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए । गरीबों को भोजन दान देना उचित है । एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए । इससे अच्छा फल प्राप्त होगा ।

फूल

शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको नीला अपराजित, नीला कमल, नीला जपाकुसुम आदि को पहनना चाहिए । फूलों को अपने हाथ में लेकर नीचे दिए गए मंत्र का आलपन करने के बाद उसको पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन सूर्यपुत्रः प्रसीदतु

पूजा

शनि को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है । नीला कमल, नीला जपाकुसुम आदि से शनि पूजा किया जाता है । तिल और कालेदाल से अभिषेक भी बनाया जाता है । नव गृहों के मदिर में दर्शन करना, गुरु गृह को नील कमल से आभूषित करना और दिया जलाना लाभदायक है । निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा शनि का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ सूर्यपुत्राय विहमहें
शनैश्चराय धीमहि
तनो मन्दः प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

शनि गृह का मौलिक मंत्र
शनि को प्रसन्न करने के लिए शनि के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ऊँ शनैश्चराय नम :
ऊँ शान्ताय नम :
ऊँ सर्वाभिष्ट प्रदायिने नम :
ऊँ शरण्याय नम :
ऊँ वरेण्याय नम :
ऊँ सर्वेशाय नम :
ऊँ सौम्याय नम :
ऊँ सुरवन्द्याय नम :
ऊँ सुरलोक विहारिणे नम :
ऊँ सुखासनोपविष्टयान नम :
ऊँ सुदंराय नम :
ऊँ मन्दाय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । शनि को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

इस आविष्कार को विशुद्ब मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 7-7-2042 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :बुध

आपका बुध दाश 7-7-2042 को शुरु होता है ।

प्ड्ड्ह्मण बुध फराशी में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर बुध दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपका अपेक्षपाती मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

बुध दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब बुध कमज़ोर है आप अपने काम में इच्छानुसार की तृप्ति और सतोष नहीं पा सकते । शुभ उत्सव या भोज में अप्रत्याशित रुकावट आने की संभावना है ।

इस समय ततसंगत निर्णयों के लेने और निबाहेन में आपको देर लगेगा । अपने क्षेत्र में आपको सहायता आवश्यक पड़ेगा । सभ कुछ आपके इच्छा के अनुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णयों को लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

व्यक्तिगत साबधों को निर्वाह करने में आपको मुसबित लगेगा । आपका वाक्य और कर्म (कार्य) प्रतिकूल परिणामों को उत्पन्न कर सकता है । सभ कुछ आपके इच्छानुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए ।बुध को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर बुध दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

हरा रंग बुध गृह का प्रिया रंग है । इसलिए बुध गृह को शान्त कराने के लिए हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । बुधवार को और बुध गृह की पूजा करते समय हरे रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति

अपने विचार और कार्य में श्रेष्ठ सामिप्य रखने से बुध दाश के हानिकारक प्रभावों से आप बच सकते है । शिक्षा सम्बधा अनुशासन जैसे अध्ययन, लेख था विधा में शमिल होने से आप बुध को शान्त कर सकते है । अपने संवाध विधा, और नए ज्ञान को पुष्ट करने पर लाभ उठा सकते है । नए नए भावाओं को सीखने की कोशिश करे और नए ज्ञान के क्षेत्रों में प्रवेश करने की कोशिश करें । अनोके शब्दों का प्रयोग करना और पंडितों के वाक्यों की अनुसरण करना बुध दाश में आपके लिए सहायक है । पुराणों और धर्मिक पुस्तकों को प्रतिदिन पठना आपके लिए लाभदायक है ।

देवता भजन

बुध गृह को शांन्त करने के लिए श्रीराम, श्रीकृष्ण और विष्णु भग्वान के अवतारों की पूजा करना चाहिए । दोनों दाश और समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए हर बुधवार को इन देवताओं का प्रार्थना करना चाहिए । इन देवताओं के मंदिर में दर्शन करना और दान देना आप के लिए लाभदायक है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद बुध की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते
सोमजानिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाश्य

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

फूल

बुध के शान्त करने के लिए आपको तुलसी का पत्ता और भेल का फूल पहनना चाहिए ।बुध दाश के समय आप पीले रंग के फूलों को पहन सकते है । पीले फूलों जैसे कचनर,कनेर,गुलेतुरा, अमलतास और कानफूल को पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन शशिपुत्रः प्रसीदतु

ऊपर दिए गए परिहारा को 7-7-2059 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :केतु

आपका केतु दाश 7-7-2059 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र शताभिषा है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थानो के अनुसार आपको प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पडेगा । जिस जोखिम में आप शमिल हो,जीत के लिए आप डरते रहेगों । इस समय आपके कल्पनाशील अर्न्तज्ञान सभी जगह अपूर्ण हो जएग । क्योंकि यह आपके चिन्ता एकाग्र करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ेगा, आपके समझने कि शक्ति भी कम हो जाएगा ।

केतु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब केतु कमजोर है प्रतिकूल निर्णय लेने की झुकाव होगा । अपनी आवशायकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर करना पड़ेगा । स्वंय रक्षा की आवश्यकता को आप कम मूल्य देगों ।

आप इस समय पूर्वकाल में जीना चाहते है । अपने कार्यों में एकान्त बनाए रखने की कोशिश करना चाहिए । आपका शरीरिक उष्णा अधिक हो जाएगा ।

आपको पचाने से सम्बधित रोगें का अनुभव होगा ।यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए ।

जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद उपयोग करने का झुकाव होगा । वैवहिक जीवन कायम रखने के लिए आपको संर्घष करना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें केतु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने पर आप केतु को शांन्त कर सकते है । आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते है । मंगलवार में आपको लाल रेग का वस्त्र पहनना चाहिए । पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति

केतु दाश में आपका जीवन केतु के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । सैद्वान्तिक ज्ञान और आध्यामिक जीवन शैली आपके मन को केतु दाश के मुसीबतों से बचने के लिए सहायक होगा । पंडित लोगें के उपदेशें और निर्देशों को स्वीकार करना चाहिए । यह आपके मानसिक शक्ति को बढ़ाने के लिए सहायक होगा । प्रंलवित किए गए धार्मिक अनुष्ठानों को फिर से शुरु करना, मन्त्रों को पठना, ध्यान के लिए कुछ समय व्यस्थ करना और क्रम के अनुसार जीवन शैली का पालने करना अत्थधिक महत्वपूर्ण है । अपने परिवार के अन्दर या बाहर के लोगें से झगडा नहीं करना चाहिए । रिपायत या छूट करने के लिए हिचकना नहीं चाहिए । वाहनों में जाते समय ध्यान रखना चाहिए । पूजा - पाठ या परिहार कर्म करते समय आपका उपस्थित होना बहुत महत्वपूर्ण है ।

देवता भजन

केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजा करना चाहिए । आपने जन्म नक्षत्र में गणेश होम करना, वृत लेकर पूर्ण चन्द्र (चतुरती) के चार दिन बाद गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगीत करना आदि से केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । कुछ ज्योतिषियाँ चामुण्डी देवी की पूजा करने के लिए सलाह देते है । जिनका केतू ओज राशी में है उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु युगम्म राशी में उनको चामुण्डी देवी की पूजा करना चाहिए ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
केतु को शान्त करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि. लाल था काला रेशम आदि दान कर सकते है । सोना, चाँदीया पंच लोहो से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है ।

फूल

केतु को शान्त करने के लिए आप शिववन्ती, जपाकुसुम,नीला अपराजित ,नीला कमल, नील रंग को जपाकुसुम आदि पहनना चाहिए । फूलों को हाथ में लेकर नीचे दिए गए मन्त्र का आलापन करने के बाद पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरसो तेन प्रसीदतु शिखीमम

ऊपर दिए गए परिहारा को 7-7-2066 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :शुक्र

आपका शुक्र दाश 7-7-2066 को शुरु होता है ।

दाश के अधिपति का हानिकारक संयोग है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर शुक्र दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपको अप्रत्याशितं मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए । दुसरो के साथ मिलते - जुलते में प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

शुक्र दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब शुक्र कमज़ोर है आपके इच्छानुसार खुशी और संतृप्ति प्राप्त नहीं होगा । लोगे और चीज़ो की ओर आपका दिलचस्प बदलता रहेगा । आपके इच्छानुसार दुसरों का प्यार और विश्वास पा सकते । आपके कार्यों और वित्तसम्बधी अवस्था में अप्रत्याशित बदलाव होग ।

अक्सर आपको शुक्र दाश में सुख - भोग से दिलचस्पी होगा । जब शुक्र गृह प्रतिकूल स्थान पर है तो यह प्रवृत्ति साधारण से भी अधिक होगा । इस समय धन खर्च करने पर स्वंय नियंत्रण रखना चाहिए ।

इस समय अपने परिवार को अधिक महत्व और संरक्षण देना चाहिए । दूसरो से मिलते जुलते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ज्यादार विपरीत लिंग के लोगें से ।

यात्र के समय था गाडी चलाते समय आपको अप्रत्याशित रुकावटों का सामना करना पड़ेगा । मेहनत करने पर असाधारण रुप से आप

थक जाएगो ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शुक्र गृह प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शुक्र को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शुक्र दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

उज्वल रंग शुक्र गृह, के लिए प्रिय है । आप शुक्र को शांन्त करोन के लिए सफेद था नीले रेग के वस्त्र पहन सकते है । इस समय तंम रंग का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए । शुक्रवार को उज्वल रंग के कपड़े पहनना उचित है ।

जीवन रीति

शुक्र दाश में आपका जीवन शैली शुक्र के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । अपने विचारों और कर्म में सदाचार और स्वभाव को सयंम रखना चाहिए । दूसरों के साथ दया और मनमोहक व्यवहार प्रकट करना चाहिए । आपके घर और उसके चारों ओर साफ रखना चाहिए । इस समय साफ कपड़े पहनना चाहिए । दूसरों को दुख देने वाले वाक्यों का प्रयोग मत करें । विपरीत लिंग के लोगें से स्नेह और आदर की भाव प्रकट करना चाहिए । इन्दीय विषय सम्बधित आनंदो पर आपके इच्छा को जाँच करें । आप शादी या पारिवारिक सम्बधों के लिए रुकावट नहीं होना चाहिए और जो लोग किसी काम बाधा डालते है उनका साथ नहीं देना चाहिए । शादियों के लिए पुर्ण रुप से सहारा देना चाहिए । संगीत सुनने से आप शुक्र को शांन्त कर सकते है ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । शुक्र गृह को शान्त करने के लिए आपको शुक्रवार में वृत्त रखना चाहिए । देवियों के मंदिर में दर्शन और अपने योग्यता के अनुसार दान प्रधान करना लाभदायक है ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
शुक्र गृह को शान्त करने के लिए चाँदी से बना शुक्र का मूर्ति, अमारा विभिन्न रंग के रेशाम, वज्र, सफेद गाय, सफेद गोड़, सुगध द्रव्य आदि को दान देना चाहिए । अन्नपूर्णेशवरी देवी को शान्त करने के लिए भोजन दान देना लाभदायक है ।

फूल

शुक्र को शान्त करने के लिए आपको सफेद फूल पहनना चाहिए । फूलों को अपने हाथ में लेकर नीचे दिए गए मंत्र का आलापन करेक फूलों को पहनना चाहिए ।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम्
सन्दधे शिरस तेन धैत्यमांत्री प्रसीदतु

ऊपर दिए गए परिहारा को 7-7-2086 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 15 साल, 2 महीने, 9 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
राहू	गुरु	27-04-1992	13-08-1994
राहू	शनि	13-08-1994	18-06-1997
राहू	बुध	18-06-1997	06-01-2000
राहू	केतू	06-01-2000	23-01-2001
राहू	शुक्र	23-01-2001	24-01-2004
राहू	सूर्य	24-01-2004	18-12-2004
राहू	चन्द्र	18-12-2004	19-06-2006
राहू	कुज	19-06-2006	07-07-2007
गुरु	गुरु	07-07-2007	24-08-2009
गुरु	शनि	24-08-2009	07-03-2012
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014
गुरु	केतू	13-06-2014	20-05-2015
गुरु	शुक्र	20-05-2015	18-01-2018
गुरु	सूर्य	18-01-2018	06-11-2018
गुरु	चन्द्र	06-11-2018	07-03-2020
गुरु	कुज	07-03-2020	11-02-2021
गुरु	राहू	11-02-2021	07-07-2023
शनि	शनि	07-07-2023	10-07-2026
शनि	बुध	10-07-2026	19-03-2029
शनि	केतू	19-03-2029	28-04-2030
शनि	शुक्र	28-04-2030	28-06-2033
शनि	सूर्य	28-06-2033	10-06-2034
शनि	चन्द्र	10-06-2034	09-01-2036
शनि	कुज	09-01-2036	17-02-2037
शनि	राहू	17-02-2037	25-12-2039
शनि	गुरु	25-12-2039	07-07-2042
बुध	बुध	07-07-2042	03-12-2044
बुध	केतू	03-12-2044	30-11-2045
बुध	शुक्र	30-11-2045	30-09-2048
बुध	सूर्य	30-09-2048	06-08-2049
बुध	चन्द्र	06-08-2049	06-01-2051
बुध	कुज	06-01-2051	03-01-2052
बुध	राहू	03-01-2052	22-07-2054
बुध	गुरु	22-07-2054	27-10-2056
बुध	शनि	27-10-2056	07-07-2059

केतू	केतू	07-07-2059	03-12-2059
केतू	शुक्र	03-12-2059	02-02-2061
केतू	सूर्य	02-02-2061	09-06-2061
केतू	चन्द्र	09-06-2061	08-01-2062
केतू	कुज	08-01-2062	07-06-2062
केतू	राहू	07-06-2062	25-06-2063
केतू	गुरु	25-06-2063	31-05-2064
केतू	शनि	31-05-2064	10-07-2065
केतू	बुध	10-07-2065	07-07-2066
शुक्र	शुक्र	07-07-2066	06-11-2069
शुक्र	सूर्य	06-11-2069	06-11-2070
शुक्र	चन्द्र	06-11-2070	07-07-2072
शुक्र	कुज	07-07-2072	06-09-2073
शुक्र	राहू	06-09-2073	05-09-2076
शुक्र	गुरु	05-09-2076	07-05-2079
शुक्र	शनि	07-05-2079	07-07-2082
शुक्र	बुध	07-07-2082	07-05-2085
शुक्र	केतू	07-05-2085	07-07-2086
सूर्य	सूर्य	07-07-2086	25-10-2086
सूर्य	चन्द्र	25-10-2086	25-04-2087
सूर्य	कुज	25-04-2087	31-08-2087

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : गुरु अपहार : शुक्र

1.शु 20-05-2015 >> 29-10-2015		**2.र** 29-10-2015 >> 17-12-2015	
3.चं 17-12-2015 >> 07-03-2016		**4.मं** 07-03-2016 >> 03-05-2016	
5.रा 03-05-2016 >> 26-09-2016		**6.गु** 26-09-2016 >> 03-02-2017	
7.श 03-02-2017 >> 07-07-2017		**8.बु** 07-07-2017 >> 22-11-2017	
9.के 22-11-2017 >> 18-01-2018			

दशा : गुरु अपहार : रवि

1.र 18-01-2018 >> 01-02-2018		**2.चं** 01-02-2018 >> 26-02-2018	
3.मं 26-02-2018 >> 15-03-2018		**4.रा** 15-03-2018 >> 27-04-2018	
5.गु 27-04-2018 >> 05-06-2018		**6.श** 05-06-2018 >> 22-07-2018	
7.बु 22-07-2018 >> 01-09-2018		**8.के** 01-09-2018 >> 18-09-2018	
9.शु 18-09-2018 >> 06-11-2018			

दशा : गुरु अपहार : चन्द्र

1.चं	06-11-2018	>> 16-12-2018	**2.**मं	16-12-2018	>> 14-01-2019
3.रा	14-01-2019	>> 28-03-2019	**4.**गु	28-03-2019	>> 01-06-2019
5.श	01-06-2019	>> 17-08-2019	**6.**बु	17-08-2019	>> 25-10-2019
7.के	25-10-2019	>> 22-11-2019	**8.**शु	22-11-2019	>> 11-02-2020
9.र	11-02-2020	>> 07-03-2020			

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	07-03-2020	>> 27-03-2020	**2.**रा	27-03-2020	>> 17-05-2020
3.गु	17-05-2020	>> 01-07-2020	**4.**श	01-07-2020	>> 24-08-2020
5.बु	24-08-2020	>> 12-10-2020	**6.**के	12-10-2020	>> 31-10-2020
7.शु	31-10-2020	>> 27-12-2020	**8.**र	27-12-2020	>> 13-01-2021
9.चं	13-01-2021	>> 11-02-2021			

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	11-02-2021	>> 22-06-2021	**2.**गु	22-06-2021	>> 17-10-2021
3.श	17-10-2021	>> 05-03-2022	**4.**बु	05-03-2022	>> 07-07-2022
5.के	07-07-2022	>> 27-08-2022	**6.**शु	27-08-2022	>> 20-01-2023
7.र	20-01-2023	>> 05-03-2023	**8.**चं	05-03-2023	>> 17-05-2023
9.मं	17-05-2023	>> 07-07-2023			

दशा : शनि अपहार : शनि

1.श	07-07-2023	>> 28-12-2023	**2.**बु	28-12-2023	>> 01-06-2024
3.के	01-06-2024	>> 04-08-2024	**4.**शु	04-08-2024	>> 03-02-2025
5.र	03-02-2025	>> 30-03-2025	**6.**चं	30-03-2025	>> 30-06-2025
7.मं	30-06-2025	>> 02-09-2025	**8.**रा	02-09-2025	>> 14-02-2026
9.गु	14-02-2026	>> 10-07-2026			

दशा : शनि अपहार : बुध

1.बु	10-07-2026	>> 26-11-2026	**2.**के	26-11-2026	>> 23-01-2027
3.शु	23-01-2027	>> 06-07-2027	**4.**र	06-07-2027	>> 24-08-2027
5.चं	24-08-2027	>> 14-11-2027	**6.**मं	14-11-2027	>> 10-01-2028
7.रा	10-01-2028	>> 05-06-2028	**8.**गु	05-06-2028	>> 15-10-2028
9.श	15-10-2028	>> 19-03-2029			

दशा : शनि अपहार : केतु

1.के	19-03-2029 >> 12-04-2029	**2.शु**	12-04-2029 >> 18-06-2029
3.र	18-06-2029 >> 09-07-2029	**4.चं**	09-07-2029 >> 11-08-2029
5.मं	11-08-2029 >> 04-09-2029	**6.रा**	04-09-2029 >> 04-11-2029
7.गु	04-11-2029 >> 28-12-2029	**8.श**	28-12-2029 >> 02-03-2030
9.बु	02-03-2030 >> 28-04-2030		

दशा : शनि अपहार : शुक्र

1.शु	28-04-2030 >> 07-11-2030	**2.र**	07-11-2030 >> 04-01-2031
3.चं	04-01-2031 >> 10-04-2031	**4.मं**	10-04-2031 >> 16-06-2031
5.रा	16-06-2031 >> 07-12-2031	**6.गु**	07-12-2031 >> 09-05-2032
7.श	09-05-2032 >> 08-11-2032	**8.बु**	08-11-2032 >> 21-04-2033
9.के	21-04-2033 >> 28-06-2033		

दशा : शनि अपहार : रवि

1.र	28-06-2033 >> 15-07-2033	**2.चं**	15-07-2033 >> 13-08-2033
3.मं	13-08-2033 >> 02-09-2033	**4.रा**	02-09-2033 >> 24-10-2033
5.गु	24-10-2033 >> 09-12-2033	**6.श**	09-12-2033 >> 02-02-2034
7.बु	02-02-2034 >> 24-03-2034	**8.के**	24-03-2034 >> 13-04-2034
9.शु	13-04-2034 >> 10-06-2034		

दशा : शनि अपहार : चन्द्र

1.चं	10-06-2034 >> 28-07-2034	**2.मं**	28-07-2034 >> 31-08-2034
3.रा	31-08-2034 >> 25-11-2034	**4.गु**	25-11-2034 >> 10-02-2035
5.श	10-02-2035 >> 13-05-2035	**6.बु**	13-05-2035 >> 03-08-2035
7.के	03-08-2035 >> 06-09-2035	**8.शु**	06-09-2035 >> 11-12-2035
9.र	11-12-2035 >> 09-01-2036		

दशा : शनि अपहार : मंगल

1.मं	09-01-2036 >> 02-02-2036	**2.रा**	02-02-2036 >> 02-04-2036
3.गु	02-04-2036 >> 26-05-2036	**4.श**	26-05-2036 >> 29-07-2036
5.बु	29-07-2036 >> 25-09-2036	**6.के**	25-09-2036 >> 18-10-2036
7.शु	18-10-2036 >> 25-12-2036	**8.र**	25-12-2036 >> 14-01-2037
9.चं	14-01-2037 >> 17-02-2037		

दशा : शनि अपहार : राहु

1.रा	17-02-2037	>> 23-07-2037	**2.**गु	23-07-2037	>> 09-12-2037
3.श	09-12-2037	>> 23-05-2038	**4.**बु	23-05-2038	>> 17-10-2038
5.के	17-10-2038	>> 17-12-2038	**6.**शु	17-12-2038	>> 08-06-2039
7.र	08-06-2039	>> 30-07-2039	**8.**चं	30-07-2039	>> 25-10-2039
9.मं	25-10-2039	>> 25-12-2039			

दशा : शनि अपहार : गुरु

1.गु	25-12-2039	>> 26-04-2040	**2.**श	26-04-2040	>> 20-09-2040
3.बु	20-09-2040	>> 29-01-2041	**4.**के	29-01-2041	>> 24-03-2041
5.शु	24-03-2041	>> 25-08-2041	**6.**र	25-08-2041	>> 10-10-2041
7.चं	10-10-2041	>> 26-12-2041	**8.**मं	26-12-2041	>> 18-02-2042
9.रा	18-02-2042	>> 07-07-2042			

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

नीचभंगराज योग

लक्षणः
बुध क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल भाव का अधिपति चन्द्र केन्द्र में है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

सुनभयोग

लक्षणः
सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि की स्थिति से सुनभा योग बनता है। यह ग्रह अकेले हो या अन्य ग्रहों के साथ हो। सुनभा योग में जन्म लेने से यह साफ़ बताया जा सकता है कि आप बड़ी बुद्धिशाली एवं प्रसिद्ध महिला बनेंगी। आप विदुषी महिला हैं। आपके पास धन की कमी नहीं होगी। संगीत तथा अन्य कलाओं में अभिरुचि जागृत होगी। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। जीवन में स्वप्रयत्न के माध्यम से प्रगति प्राप्त करने का प्रयास चालू रहेगा। अन्य लोगों के बातचीत करने के ढंग को देखकर उनके मनोभाव को जानने में प्रवीण हैं।

अनभयोग

लक्षणः
सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न से बारहवीं राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि अकेले या एक साथ स्थित रहने पर अनभा योग बनता है। अनभा योग लड़की और उसके पति को श्रीमंत और सुखी बनाता है। भौतिक संपत्तियों से तथा लौकिक प्रतिष्ठाओं के साथ आपका चरित्र सुशोभित रहेगा। आपको अच्छे कपड़े, आभूषण और नये परिधान अच्छे लगते हैं। अपनी दानशीलता तथा दयाशीलता से आप एक कुशल गृहिणी कहलायेंगी। धनी होते हुए भी आप व्यवहार में अहंकार और चंचल स्वभाव से मुक्त रहेंगी। स्वभाव में विनयभाव प्रकट हो उठेगा। योग्य शारीरिक सौन्दर्य, शाँत गंभीर मुखमुद्रा इन योगवालों के लक्षण हैं। आपका करुणापूर्ण व्यवहार और विनय आप को कीर्ति प्रदान करेगा।

दूरदूरयोग

लक्षणः
अनभ और सुनभ दोनो योग प्राप्य हैं।

जन्म पत्रिका में जब सुनभा और अनभा योगों की जोड़ी बनती हैं तब उसे दुरुधरा योग कहा जाता हैं। यह योग आपकी कुंडली में बना है। इसके अनुसार आप धनी महिला बनी रहेगी। इसका फल लड़कपन में पिता को और शादी के बाद पति को प्राप्त होगा। धन का अभाव आपको कभी न होगा। इतनी सुविधा होते हुए भी आप अहंकार
और अक्कड़पन से मुक्त रहेंगे। विनयपूर्ण एवं प्रेमपूर्ण स्वभाव से श्रेष्ठ गृहिणी का पद सुशोभित होगा। आपको सभी सुखसुविधाएँ प्राप्त होगी। आप संपन्नता की प्रतिमूर्ति हैं। आप को वाहन योग प्राप्त हैं।

गज़केसरी योग

लक्षणः
चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

गजकेसरी योग गुरु और चन्द्र के परस्पर केन्द्रस्थ होने से बनता है। आप का जन्म इस योग में होने से ज्योतिशास्त्र के आधार पर ऐसा माना जाता हैं कि आपका जन्म जिस परिवार में हुआ वह सौभाग्य से भरा रहेगा। आप जहां कहीं भी रहेंगी वहाँ धन, संपत्ति तथा विजय ज़रूर प्राप्त होगी। यही नहीं केसरीयोग की ऐसी विशेषता होती हैं कि इस योग में पैदा होने वाली लड़की अपने पति के केमद्रुम आदि योगों का दोष दूर कर देती है। सामान्य रूप में आप दीर्घायु रहेगी और आपका जीवन सफल रहेगा। दूसरी औरतों की अपेक्षा आप विपरीत परिस्थिति में भी बुद्धि और चिंतन के माध्यम से समस्याओं का निराकरण कर पायेंगी।

वसुमतियोग

लक्षणः
गुरु, शुक्र और बुध लग्नस्थल या चन्द्रस्थान से उपचयन स्थिती में रहे हैं।

वसुमती योग में जन्म होने के कारण बहुत बड़ी संपत्ति की मालकिन बनेंगी। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण और सुखमय होगा। आप ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहेंगी।

अमलयोग

लक्षणः
लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आपका जन्म अमला योग में होने से आप और आप के पति संपत्ति और कीर्ति उपार्जन कर पायेंगे। आप के विरुद्ध मनोभाव और कल्याणकारी कार्यों को जन समूह आसानी से समझ पायेंगे। आप बड़ी अमीर बन जाएँगी। हृदय की निर्मलता से आप को समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त होगा। इस कारण मान्यता भी प्राप्त होगी। आपका सारा जीवन सुखपूर्ण और ऐश्वर्यमय रहेगा।

सशीमंगलयोग

लक्षणः
चन्द्र और मंगल एक ही स्थान पर रहे हैं।

आपकी जन्मपत्रिका में कुज (मंगल) और चन्द्र एक ही राशि में होने से आपको इस योग की प्राप्ति हुई है। शशिमंगल योग के अनुग्रह से आप का जीवन आनन्दमय रहेगा। जन्म की तिथि से यानी बालावस्था से धन की कमी का अनुभव आपको नहीं होगा। आपकी आवश्यकतायें जल्दी ही पिता या पति से पूरी की जायेगी। आपकी जन्मपत्रिका के आधार पर, आपकी आवश्यकता के अनुसार आपके माँ-बाप या पति के हाथ में रुपये का प्रवाह ही हो जाता है। कहीं न कहीं से आपकी आवश्यकता फलीभूत होती रहेगी। धन की देवी कभी भी आपको छोड़कर नहीं जायेगी।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
चन्द्र,मंगल , नवमा भाव में है ।

बड़ो की राय को अनादर करने का प्रवृत्ति होगा । रक्त सम्बधित बीमारियों के लिए सही समय पर वैध्य चिकित्सा लेना चाहिए । सम्पत्ति और धैर्य सही समय पर आपका साथ देगा । दूसरों की ध्यान देने और समझने की प्रकृति से आपको साथ काम करने वाले और रिशतेदारो का अभिनन्दन और प्यार प्राप्त होगा ।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि,शुक्र , अग्यारवाँ भाव में है ।

प्रायोगिक परिस्थितियों में आप बुद्वि पूर्वक होकर काम करना जानते है नौतिकत्व मूल्यों और व्यवहारों पर ध्यान देना चाहिए । दूसरों की सहायता किए बिना अपने बुद्वि और शक्ति से धन कमाना चाहिए ।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	श्रेष्ट समय				युवावस्था
बु	क्षीण परिस्थिती				युवावस्था
शु					बालावस्था
मं					मित्रवस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था
श					कुमारावस्था

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5*	3	6*	3	3	4	27
वृषभ	3	4	4	5	3	5	2	26
मिथुन	6	1	3	5	3	6	4	28
कर्क	5	4	6	4	4	3	4	30
सिंह	4	4	5	4	5	5*	2	29
कन्या	2	4	5	3	4	4	2	24
तुला	4	4	2	4	1	4	2	21
वृशचिक	6	6	6	4	4	5	5	36
धनु	4	5	5	4	2	7	4	31
मकर	3	4	4	5	4	3	4*	27
कुंम्भ	4*	4	5	4	3*	5	3	28
मीन	5	3	6*	4	3	6	3	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न मिथुन में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के प्रभाव से आपका भाग्य अपने जन्मकुण्डली में उपस्थित चार बिन्धुओं के कारण होगा । आपको भाग्यशाली ताबीज या भाग्य का सन्देश पहुँचने वाला कहा जाएगा । यह प्रभाव आपके परिवार के संतोष और समृद्वि का कारण बन जाएगा ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

सूर्य के अष्टकवर्गा में पाँच बिन्धु है और आप धर्मनिष्ट लोगों के साथ होगा । आपको ज्ञान और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगा । आपके सफलताओं पर लोग प्रंशसा करेगें । आपको कभी भी नए कपडों से प्यार नहीं होगा । अपने यौवन और बचपन के समय बहुत से उत्सवों को मना सकते है ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के बुध अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है । यह आपको हर क्षेत्र में सफलता प्रधान करता है । औधोगिक विषय और परियोजनओं में कोई रुकावट और मुसीबत नहीं होगा ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्‌भुत लोगों के संयोग का आकर्षित करता है । वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्गा में उपस्थित छः बिन्धुओं के कारण है । अपने आकर्षण को सही रुप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु यह सूचित करता है कि आपको अपने प्रिय लोगें से दूर रहना पडेगा । यह आपके विदेशी उधोग के कारण होगा । आप इस वियोग को पूर्ण रुप से आनन्द नहीं कर साकेगो फिर भी आपको यह सहना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्गा में उपस्थित पाँच बिन्धुँए महत्वपूर्ण वरदान है । यह आपके परिश्रम के लिए सफलता प्राप्त करने में, चुनौतियों का सामना करने के लिए और शत्रुओं से बचने के लिए सहायक होगा । आप इस भाग्यशाली गृहों के अवस्थिति के नीचे जन्म लिया है और इस परिस्थिति के लाभ का अनुभव कर सकते है और सफलता प्राप्त कर सकते है ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करता है । अपने परिवार रिशतेदारो और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २९ , २७ और ३० उम्र में होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में लग्न, नवमी, दसवी और ग्यारहवी भाव में तीस और उससे कम बिन्धु है । यह आपको सम्पत्ति प्राप्त होने से वांछित करेगा । जीवन कष्ट और खिंचाव से भरा होगा । अपने भवितव्यता को दोषारोप करने से कोई फायद नहीं होगा परन्तु विचारों को सही रास्ते पर रखकर मुसीबतों का सामना करना चाहिए ।

गोचर फल

नाम : **Sample** (स्त्री)
जन्म राशी : **कुंम्भ**
जन्म नक्षत्र : **शताभिषा**

गृहस्थिती : 28-डिसंम्बर- 2015
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान में उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्व पूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिकता रखने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया गया है।

∇ (15-डिसंम्बर-2015 >> 14-जानुवरी-2016)

इस समय सूर्य अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

एक युवती होने के नाते हर कार्य में पूर्ण सुरक्षा की अपेक्षा रखने की आदी हैं। एक के बाद एक सफलता की श्रृंखला का सर्जन होनेवाला है। प्रगति के रास्तों से आगे बढ़नेवाली हैं। व्यापार वाणिज्य से उपार्जन हुआ धन लाभ का उपभोग करने का योग है। शेयर बाज़ार और जुए के प्रति मन आकर्षित होगा। सट्टे बाज़ार में भी दिलचस्पी पैदा होगी। आप भाग्यशाली हैं। इस कारण लाटरी टिकट से लाभ की संभावना भी है। अब आपका स्वास्थ्य आरोग्यपूर्ण रहनेवाला है।

∇ (14-जानुवरी-2016 >> 13-फेब्रुवरी-2016)

इस समय सूर्य बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

अब सूर्य अनुकूल रहनेवाला नहीं है। कार्यक्षेत्र को प्रभावित करनेवाले अनेक प्रश्न उत्पन्न होंगे। पति और उनके संबन्धियों से अयोग्य व्यवहार करने की संभावना रखते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जाग्रत रहना बुद्धिगम्य माना जायेगा। अगर टाल सकें तो अब यात्राओं से दूर ही रहें तो अच्छा होगा। स्वास्थ्य में कमज़ोरी का अनुभव होगा। रोग का शिकार बनना पड़ेगा। इस कारण सतर्क रहना अच्छा होगा। मानसिक शाँति के लिए प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। व्यर्थ के खर्चों से बच पाना कठिन होगा।

∇ (13-फेब्रुवरी-2016 >> 14-मार्च-2016)

इस समय सूर्य जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आप युवावस्था की ओर बढ़ रही हैं। मानसिक और शारीरिक परिपक्वता प्राप्त करनेवाली युवती हैं। चिंतन प्रणाली और भावना जगत में परिवर्तन की संभावना रखती हैं। अभिलाषा में भी परिवर्तन का अनुभव होगा। चारों ओर बन रहे परिवर्तनों के साथ सहयोग रखने से अनुकूल स्थिति उत्पन्न होगी। आपके व्यवसाय क्षेत्र में या निवास स्थान में परिवर्तन होने की संभावना रखती हैं। अभ्यास क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। छोटी-मोटी मुश्किलों के बीच से गुज़रना होगा। प्रवृत्ति क्षेत्र अथवा यात्रा संबन्धी समस्यायें उत्पन्न होगी। अनेक प्रयासों के बावजूद भी इन समस्याओं से संपूर्ण रूप से मुक्त होना असंभव हैं। अकारण क्रोधित होना सामान्य बात होगी।

गुरु का गोचर फल।

हर राशि में गुरु एक साल तक रहता है। गुरु के कारण अति महत्वपूर्ण अनुभव होते रहते हैं। आपकी चन्द्र राशि में वर्तमान में वह क्या फल देगा, यह नीचे दर्शाया जा रहा है।

∇ (15-जूलाई-2015 >> 11-अगस्त-2016)

इस समय गुरु सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

महिमापूर्ण जीवन के कार्यों में गुरु की शक्ति प्रतिभाशील रहेगी। पुरुष वर्ग के समूह में मान्यता उपलब्ध होगी। आकर्षण और प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त होगा। इस समय कार्यकुशलता भरी निपुणता प्रकट होगी। समूह के बीच महिला रत्न मानी जायेंगी। आपके सहयोगियों तथा मित्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। ज़िम्मेदारी के कार्य का निर्वाह बड़ी सुन्दरता से किया जायेगा और इस कारण आपका समूह में स्वागत किया जायेगा। असाधारण मान्यता तथा सम्मान प्राप्त होगा। विवाह संबन्धी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

∇ (12-अगस्त-2016 >> 12-सितंम्बर-2017)

इस समय गुरु आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

अब गुरु प्रतिकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। एक के बाद एक कठिनाईयाँ और विघ्नों की श्रृंखला उत्पन्न होनेवाली है। इस कारण मन उद्‌वेग से भर उठेगा। अनेक कार्यों से मन पीछे हट जाने का प्रयास करेगा। निरुत्साही बनना पड़ेगा। असाधारण प्रकार से क्रोधित होना पड़ेगा। स्त्री को शोभा न देनेवाला क्रोध आप में प्रकट होगा। सशक्त मन की अगाधता में कोई विचित्र प्रकार की धुन का अनुभव होगा। इस प्रकार के अनुभव साधारण स्थिति में कौमार्यकाल के अनुभव से दुःख पैदा करनेवाले होते हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ न हो उसके प्रति जागृत रहना अनिवार्य है। साक्षात्कार, प्रतियोगिता और महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल न होगा।

शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि का गोचर संचार शुभ नहीं होता। शनि के प्रभाव के कारण निराश होना पड़ता है और मन उद्‌वेग से भर उठता है। फिर भी अनुकूल ग्रह योग स्थिति में अप्रतिक्षित लाभ भी दिलानेवाला होता है। हर राशि में शनि दो वर्ष और छः महीने तक स्थान गृहण करता है।

∇ (3-नवेम्बर-2014 >> 26-जानुवरी-2017)

इस समय शनि दशावाँ भाव का सक्रमण करेगा

हर मार्ग से सफलता को प्राप्त करने की कोशिश जारी रहेगी। आप में शौर्य का जागरण होगा जो एक स्त्री के लिए शोभनीय नहीं रहेगा। व्यर्थ के मतभेद को लेकर पति के साथ कलह होगा। परिवार के बीच भी कलह होगा। मानसिक सन्तुलन बनाये रखना असंभव होगा। सोचे समझे बिना हर कार्य में कूद पड़ने की संभावना दिखती हैं। परिवार की बदनामी न हो इस बात का ध्यान रखें तो फिर कुछ या प्राप्त होगा और सम्मानित होंगी। अभ्यास क्षेत्र में प्रगति प्राप्त करना कठिन होगा। साहित्य कार्य में (लेखन इत्यादि) कमी का अनुभव होगा। अब आप कण्टक शनि के बुरे गोचर से गुज़र रही हैं।

∇ (27-जानुवरी-2017 >> 21-जून-2017)

इस समय शनि अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

आप स्वयं भाग्यवान हैं ऐसा भ्रम होगा। परिवार के बीच और बाहरी क्षेत्र में एक समर्थ स्त्री कहलायेंगी। इस कारण सभी लोगों से बहुमानित होगी। धन-संपत्ति में कोई कमी नहीं रहेगी। धारणा के युक्त काम आगे नहीं बढ़ेंगे। उल्टे गति में कमी का अनुभव होगा। कुछ समय के बाद आप गतिशील बनेंगी। बच्चे संतोष का अनुभव करेंगे। जो कार्य अनेक बाधाओं से रुके पड़े थे वे गतिमान होंगे और इस कारण स्वस्थता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ और उच्चतर कार्यालयों से अनुमोदनीय बुलावे प्राप्त होंगे। मान्यता भी प्राप्त होगी। पति के साथ उल्हासमय, रस भरपूर जीवन बिताने की स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा। लाभ के स्रोतों में वृद्धि की आशा कर सकती हैं।

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पुर्नवासु	गुरु	शनि	बुध
चन्द्र	शताभिषा	राहु	गुरु	गुरु
रवि	भरणी	शुक्र	शुक्र	शुक्र
बुध	उत्तर भद्रपाढा	शनि	गुरु	राहु
शुक्र	अशविनि	केतु	शुक्र	शुक्र
मंगल	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	चन्द्र	मंगल
गुरु	मघा	केतु	शनि	राहु
शनि	धनिष्ठ	मंगल	मंगल	शुक्र
राहु	मूल	केतु	शनि	बुध
केतु	आर्द्र	राहु	गुरु	रवि
गुलिक	पूर्व फालगुनी	शुक्र	बुध	रवि

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	मिथुन	22:18:49	पुर्नवासु / 1	गुरु	सिंह	10:53:52R	मघा / 4
चन्द्र	कुंम्भ	8:44:45	शताभिषा / 1	शनि	मकर	23:56:28	धनिष्ठ / 1
रवि	मेष	13:26:48	भरणी / 1	राहु	धनु	9:50:42	मूल / 3
बुध	मीन	16:36:13	उत्तर भद्रपाढा / 4	केतु	मिथुन	9:50:42	आर्द्र / 1
शुक्र	मेष	0:47:26	अशविनि / 1	गुलिक	सिंह	24:42:45	पूर्व फालगुनी / 4
मंगल	कुंम्भ	29:34:12	पूर्व भद्रपाढा / 3				

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	15:22:34	16:55:49
बुध	अर्धप्रहर	9:9:34	10:42:49
मंगल	मृत्यु	7:36:19	9:9:34
गुरु	यमकंठक	10:42:49	12:16:4
शनि	गुलिक	13:49:19	15:22:34

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	147:51:55	सिंह	27:51:55	उत्तर फालगुनी	1
अर्धप्रहर	59:16:8	वृषभ	29:16:8	मृगशिरा	2
मृत्यु	36:50:34	वृषभ	6:50:34	कृत्तिका	4
यमकंठक	80:40:9	मिथुन	20:40:9	पुर्नवासु	1
गुलिक	124:31:9	सिंह	4:31:9	मघा	2
परिवेष	33:13:12	वृषभ	3:13:12	कृत्तिका	2
इंद्रचाप	326:46:48	कुंम्भ	26:46:48	पूर्व भद्रपाढा	3
व्यथिपात	213:13:12	वृशचिक	3:13:12	विशखा	4
उपकेतु	343:26:48	मीन	13:26:48	उत्तर भद्रपाढा	4
धूम	146:46:48	सिंह	26:46:48	उत्तर फालगुनी	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	उत्तर फालगुनी	रवि	चन्द्र	शनि
अर्धप्रहर	मृगशिरा	मंगल	शनि	चन्द्र
मृत्यु	कृत्तिका	रवि	बुध	शनि
यमकंठक	पुर्नवासु	गुरु	गुरु	बुध
गुलिक	मघा	केतु	चन्द्र	केतु
परिवेष	कृत्तिका	रवि	शनि	शनि
इंद्रचाप	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	शुक्र	शुक्र
व्यथिपात	विशखा	गुरु	राहु	मंगल
उपकेतु	उत्तर भद्रपाढा	शनि	राहु	गुरु
धूम	उत्तर फालगुनी	रवि	रवि	मंगल

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	3	11	1	12:	1	11	5	10:	9	3	5
औरा	4:	5	5	5	5	4:	5	5	5	5	4:
द्रिख्खन	11	11	5	4:	1	7	9	6:	9	3	1
चतूथांश	9	2:	4:	6:	1	8:	8:	7	12:	6:	2:
सप्तांश	8:	1	4:	9	1	5	7	9	11	5	10:
नवांश	1	9	5	8:	1	3	4:	5	3	9	8:
दशांश	10:	1	5	1	1	8:	8:	1	12:	6:	1
व्दादशांश	11	2:	6:	6:	1	10:	9	7	12:	6:	2:
सोडांश	8:	9	8:	5	1	8:	10:	1	2:	2:	6:
विंशाम्स	7	2:	9	4:	1	4:	4:	4:	11	11	1
चतुर्विंशाम्स	10:	11	3	5	5	4:	1	11	12:	12:	12:
भम्श	3	2:	1	12:	1	9	10:	1	9	3	11
त्रिंमशांश	3	11	9	12:	1	7	9	10:	11	11	3
खवेदांश	6:	12:	6:	5	2:	4:	3	2:	2:	2:	9
	6:	6:	9	9	2:	1	9	12:	11	11	6:
शष्टियांश	11	4:	3	9	2:	10:	2:	9	4:	10:	6:
ओजराशी गणन	9	9	11	8	13	7	9	10	9	9	7

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

वर्गोत्तम

शुक्र वर्गोतम में है ।

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5	3	6	3	3	4	27
वृषभ	3	4	4	5	3	5	2	26
मिथुन	6	1	3	5	3	6	4	28
कर्क	5	4	6	4	4	3	4	30
सिंह	4	4	5	4	5	5	2	29
कन्या	2	4	5	3	4	4	2	24
तुला	4	4	2	4	1	4	2	21
वृशचिक	6	6	6	4	4	5	5	36
धनु	4	5	5	4	2	7	4	31
मकर	3	4	4	5	4	3	4	27
कुंम्भ	4	4	5	4	3	5	3	28
मीन	5	3	6	4	3	6	3	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
418.20	698.49	373.14	338.80	365.14	453.67	382.36
संपूर्ण शडबल (रूप)						
6.97	11.64	6.22	5.65	6.09	7.56	6.37
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.16	2.33	0.89	1.03	1.22	1.16	1.27
संबन्धी स्थानक						
4	1	7	6	3	5	2

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	26.24	49.95	4.25	19.40	30.58	44.39	27.62
कष्टफल	32.85	4.50	39.28	8.22	20.79	15.07	32.34

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
373.14	418.20	698.49	373.14	338.80	365.14	453.67	382.36	382.36	453.67	365.14	338.80
भावद्रिगबल											
60.00	40.00	10.00	30.00	20.00	50.00	30.00	20.00	20.00	0	50.00	40.00
भावद्रिष्टीबल											
36.84	13.86	-2.76	58.67	56.05	51.22	58.23	20.24	54.79	38.19	39.48	23.87
संपूर्ण भावबल											
469.98	472.06	705.73	461.81	414.85	466.36	541.90	422.60	457.15	491.86	454.62	402.67
भावबल के रुप											
7.83	7.87	11.76	7.70	6.91	7.77	9.03	7.04	7.62	8.20	7.58	6.71
संबन्धी स्थानक											
5	4	1	7	11	6	2	10	8	3	9	12

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[CompleteHoroscope 12.5.2.0]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.